केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
श्रीरघुनाथकीर्तिपरिसरः,
देवप्रयागः, उत्तराखण्डः-249301

National Education Policy 2020

भारतसर्वकारस्य शिक्षामन्त्रालयस्य

संस्कृतसंवर्धनयोजनायाम्

आन्तरिकगुणवत्ता-आश्वासनप्रकोष्ठदर्शनविभागस्य च संयुक्ततत्त्वावधाने

त्रिदिवसीयाखिलभारतीयसंस्कृतसम्मेलनम्

2020-वर्षीयराष्ट्रियशिक्षानीत्यालोके भारतीयज्ञानप्रणाली

Three Days All India Sanskrit Conference

on

Indian Knowledge System in the light of New Education Policy- 2020

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में भारतीय ज्ञान प्रणाली)

==========

15-17, November, 2024

Blended Mode

==========

CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY
SHRI RAGHUNATH KIRTI CAMPUS, DEVPRAYAG

प्रस्ताव

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर देवप्रयाग में शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार नई दिल्ली की संस्कृत संवर्धन योजना अंतर्गत संस्कृत संस्कृति विकास संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक-15 से 17 नवंबर 2024 तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में भारतीय ज्ञान प्रणाली विषय पर तीन दिवसीय अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन आयोजित किया जाएगा।

- इस संगोष्ठी में शिक्षकों के लिए ₹200 तथा शोधार्थियों विद्यार्थियों के लिए ₹100 पंजीयन शुल्क निर्धारित किया गया है।
- इच्छुक अध्यापक /शोधार्थी/ स्नातकोतर विद्यार्थी निर्धारित शुल्क का भुगतान कर शोध पत्र वाचन हेतु पंजीयन कर सकते हैं।
- सम्मेलन में भाग लेने हेतु परिसर द्वारा चयनित प्रतिभागियों को आमन्त्रण दिया जाएगा ।
- भोजन आवास व्यवस्था परिसर द्वारा की जाएगी ।
- यात्रा व्यय स्वयं वहन करना होगा ।
- कार्यक्रम ऑनलाइन/ऑफलाइन दोनों माध्यम से आयोजित किया जाएगा ।
- शुल्क जमा करने हेतु निर्धारित अकाउंट का क्यूआर कोड फॉर्म में दिया गया है।
- सम्मेलन में संस्कृत से संबंधित भारतीय ज्ञानपरंपरा के विषय-विशेषज्ञ / अध्यापक शोधार्थी तथा स्नातकोतर विद्यार्थी भारतीय ज्ञान परंपरा या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से संबंधित विषय पर अपने मौलिक शोध पत्र प्रस्तुत कर सकेंगे।

बीजप्रत्यय (Concept Note)

भारतीय संस्कृति के आरंभ से ही संस्कृतभाषा शोध तथा अध्ययन-अध्यापन के माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित है। अतः भारतीय ज्ञान शाखा संस्कृत में ही निहित है। इसका तात्पर्य यह है कि संस्कृत केवल भाषा मात्र नहीं अपितु भारतीय ज्ञान परंपरा की शब्द राशि है। समस्त विश्व के सर्व प्राचीन ग्रंथ वेदों की बात हो अथवा वेद संबंधित दूसरे

ग्रंथ – भारतीय विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, दर्शन, व्याकरण, काव्य, वास्तुशास्त्र, स्थापत्य विद्या, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, चैतन्यविज्ञान आदि सभी संस्कृत में समाविष्ट हैं। संस्कृत का विस्तार तथा आवश्यकता इन निम्नलिखित बिंदुओं से समझी जा सकता है[1] –

- वैदिक तथा उस पर आधारित लौकिक वाङ्मय के अध्ययन तथा शोध के बिना भारतीय ज्ञान संपदा एवं जीवनदृष्टि को जानना अशक्य है। यह केवल संस्कृत के द्वारा ही संभव हो सकता है।
- संस्कृत में 1,00,000 से भी अधिक पांडुलिपियाँ है जिनमें असीमित ज्ञान है। यह सभी अप्रकाशित हैं। इनका संपादन और प्रकाशन संस्कृत के ज्ञान से ही संभव हो सकता है।
- संस्कृत भाषा संपूर्ण भारत देश में व्याप्त है। इसी के माध्यम से भारतवर्ष एक सूत्र में निबद्ध था। इसीलिए भारतवर्ष की अखंडता के लिए संस्कृत ज्ञान आवश्यक है।
- भारत की लगभग सभी भाषाएं संस्कृत की शब्दावली को प्रचुर मात्रा में प्रयोग करती हैं। इसीलिए क्षेत्रीय भाषाओं में संस्कृत की शब्दावली उनकी जीवन दृष्टि का विकास करती है। अतः संस्कृत अन्य भाषाओं को समझने में सहायक भी बनती है।
- संस्कृत भाषा विश्व स्तर पर भी व्याप्त है। इस विश्व में ऐसा कोई भी विश्वविद्यालय नहीं है, जहां पर संस्कृत के अध्ययन के बिना भारतीय ज्ञान को समझा जा सके। केवल जर्मनी देश में ही 14 विश्वविद्यालयों में संस्कृत का अध्ययन अध्यापन तथा शोध होता हैं। अन्य देशों के प्रमुख विश्वविद्यालयों में भी संस्कृत का अध्ययन अध्यापन शोध किसी न किसी प्रकार से होता ही है।
- भारत में गणित की समृद्ध परंपरा थी। सृष्टि के आरंभ से वर्तमान तक काल गणना प्रणाली संस्कृत में ही सुरक्षित है। भारतीय गणित परंपरा के योगदान से ही आधुनिक विज्ञान की समृद्धि हुई है।

---

[1]. रामनाथ झा, 'भारतीयज्ञानपरम्परायाः स्त्रोतः संस्कृतम्' विद्यानिधिप्रकाशन, दिल्ली – वर्ष 2019 की भूमिका से अनुदित।

- आधुनिक विज्ञान के बहुत सारे निष्कर्ष वैज्ञानिकों को वेदों के तथा वेद संबंधित ग्रंथों के अध्ययन के प्रति ज्ञान गंभीरता तथा सहजता से आकर्षित करते हैं। इन वैज्ञानिक सिद्धांतों का ज्ञान संस्कृत के बिना संभव नहीं है।
- भारत का योग वैश्विक समाज के लिए अनुपम योगदान है। योग के माध्यम से मानव अपने शरीर मन तथा आत्मा को समन्वित करने में कुशल होता है तथा अंतत: समाधि के माध्यम से विश्व चैतन्य को अनुभव करता है। योग से संबंधित समस्त साहित्य संस्कृत में ही है। इसीलिए संस्कृत के बिना ऐसी उपलब्धि प्राप्त करना अशक्य है।
- 'आयुर्वेद' विश्व की सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। जिसमें रोग से पूर्व तथा पश्चात् चिकित्सा का सांगोपांग विधान है। आयुर्वेद का समस्त साहित्य भी संस्कृत में ही है।
- भारतीय दर्शनशास्त्र (आस्तिक तथा नास्तिक) मीमांसा से लेकर स्वामी दयानंद के दर्शन तक संस्कृत में ही निहित है।
- पुराण साहित्य, जिसको विश्व का कोश भी कहा जाता है, जिसमें संपूर्ण विश्व का ज्ञान सन्निहित है, वह भी संपूर्ण रुप से संस्कृत में ही है।
- धर्मशास्त्र, जिसमें भारतीय समाज की संरचना, कर्तव्यकर्म, शासन प्रणाली, गृहस्थ धर्म आदि का सांगोपांग विश्लेषण है, यह भी संपूर्णतया संस्कृत में ही है।
- पालि भाषा के अतिरिक्त बौद्ध धर्म एवं दर्शन, जो वैश्विक स्तर पर अनेक देशों के जिज्ञासुओं को जीवन दृष्टि प्रदान करती है, वह सब प्राय: संस्कृत में ही है।
- प्राकृतग्रन्थों के अतिरिक्त जैन धर्म एवं दर्शन भी प्राय: सभी संस्कृत में ही उपलब्ध है।
- रक्षा एवं सैन्य विज्ञान, जिसमें आदि काल से ही भारतवासी अग्रगण्य रहे हैं, वह सब कुछ संस्कृत में ही उपलब्ध है।
- कृषि विज्ञान से संबंधित अनेक ग्रंथ संस्कृत में ही उपलब्ध है, जिनमें कृषि कार्य के सभी पक्ष सांगोपांग वर्णित हैं।
- भारतीयज्ञानपरंपरा में अनोखा ग्रंथ कौटिल्य का अर्थशास्त्र, संस्कृत में ही है।

- पर्यावरण की दृष्टि से भारतवर्ष हमेशा से ही जाग्रत रहा है। प्रकृति के प्रत्येक रूप को देवता रूप मानकर उसकी सुरक्षा करना हमारी स्वाभाविक वृत्ति है, यह संपूर्ण परंपरा प्रायः संस्कृत में ही सुरक्षित है।
- भारत से अतिरिक्त विश्व के अन्य देशों के शोध संस्थानों में भी एक लाख से अधिक संस्कृत की पांडुलिपियाँ हैं, यह सभी संस्कृत के ज्ञान के द्वारा ही पुनः भारत में लाई जा सकती हैं।
- व्याकरण की दृष्टि से संस्कृत की संरचना सबसे उत्कृष्ट तथा वैज्ञानिक भी है संस्कृत के ज्ञान के बिना तुलनात्मक भाषाविज्ञान आगे बढ़ाना अशक्य है तथा विश्व की दूसरी भाषाओं का सम्यक् ज्ञान भी असंभव है।
- भारत के सर्वप्रथम तथा प्रेरणास्पद साहित्य रामायण कथा महाभारत हैं। इनके अतिरिक्त ऐसे असंख्य संस्कृत साहित्य रचे गए हैं और अभी भी रचे जा रहे हैं। इनमें निहित मानव मूल्य संस्कृत के ज्ञान के बिना समझा नहीं जा सकता है।
- विश्व का प्रथम नाट्य शास्त्र संस्कृत में उपलब्ध है तथा विश्व की प्रथम संगीत विद्या सामवेद में उपलब्ध है। भारतीय संगीत कला से संबंधित असंख्य ग्रंथ संस्कृत में ही उपलब्ध हैं।
- भारतीय ज्ञान परंपरा का विकास प्रश्नोत्तर की शैली तथा तर्क परंपरा की शैली पर आधारित है। तर्क विद्या से संबंधित सभी ग्रंथ है संस्कृत में ही उपलब्ध हैं।
- शिक्षा का आदान प्रदान कैसे हो? गुरुकुल तथा विश्वविद्यालयों का स्वरूप कैसा हो? गुरु शिष्य का संबंध कैसा हो? शिक्षा का उद्देश्य क्या हो? यह सभी पक्ष हमारे ऋषियों द्वारा पहले से ही विचार किए गए हैं। ऐसे सभी विचार संस्कृत में ही उपलब्ध हैं।
- संस्कृत भाषा संगणक अर्थात् कंप्यूटर के लिए भी सर्वथा अनुकूल है – यह तो सभी जानते हैं। भारत में कृत्रिम भाषा का प्रारंभ कब और कैसे हुआ, कंप्यूटर के साथ इसका समन्वय कैसे हो सकता है – यह जानना संस्कृत ज्ञान के बिना संभव नहीं हो पाएगा।

- संस्कृत के प्रकाशित अनेक ग्रन्थ अपने मूल रूप में विद्यमान हैं, जिनके सर्व भारतीय भाषाओं में अनुवाद की अत्यन्त आवश्यकता है जो संस्कृत के ज्ञान के बिना संभव नहीं है।
- संस्कृत से अतिरिक्त अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के ग्रंथों का दूसरी क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद के लिए भी संस्कृत के ज्ञान की आवश्यकता है।

मुख्य विषय (Main Topic)

सम्मेलन से संबंधित प्रमुख विषय हैं- ''राष्ट्रिय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में भारतीय-ज्ञान-प्रणाली'' । भारतीयज्ञानपरंपरा को लेकर असीमित शोध की संभावनाएं हैं। संपूर्ण प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान संस्कृत एवं वैदिक संस्कृति में सुरक्षित है। इस सम्मेलन में प्रस्तुत शोध पत्रों के माध्यम से प्राचीन भारतीयज्ञानप्रणाली के विषयों को आधुनिक विषयों के साथ जोड़कर नए शोध किये जा सकेंगे। इन नए शोध से संबंधित प्रमुख विषयक्षेत्र हैं- प्राचीन भारतीय संस्कृति, वेद, वेदांग, उपनिषद, पुराण, संस्कृत-साहित्य, काव्य, महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य आदि में प्राचीनभारतीय खगोलविज्ञान, कृषिविज्ञान, योग, आयुर्वेद, ज्योतिष, रसायनविज्ञान, जीवविज्ञान, मनोविज्ञान, मानवशास्त्र, मूल्यमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, नीतिमीमांसा, धर्ममीमांसा, राजनीति, प्रशासन, सामाज, ऐतिहासिक संदर्भ आदि ।

आनुषंगिक विषय (Sub themes)

सम्मेलन से संबंधित प्रमुख आनुषंगिक विषय निम्न प्रकार से हैं-

1. प्राचीन भारतीय संस्कृत ग्रन्थों एवं संस्कृति में निहित ज्ञान विज्ञान अध्यात्म धर्म दर्शन योग आयुर्वेद शोधपद्धति कृषि पशुपालन ऐतिहासिक वृतांत आदि।

2. प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के स्रोत के रूप में संस्कृत में विद्यमान विभिन्न विषयों का वर्तमान आधुनिक विषयों के साथ अंतर संबंध।

3. प्राचीन ज्ञान प्रणाली में स्थित शैक्षिक सिद्धांत एवं उनकी प्रासंगिकता

4. प्राचीन ज्ञान प्रणाली में स्थित सामाजिक सिद्धांत एवं उनकी उपयोगिता

5. प्राचीन ज्ञान प्रणाली में किये जा रहे शोध की भविष्य कालीन संभावनाएं एवं समाज के लिए उसके लाभ

6. भारतीय ज्ञान परंपरा का स्त्रोत संस्कृत

उपविषय (Subtopics)

1. वैदिक वाङ्मय में पशु पोषण एवं कृषि
2. वेदों में योग एवं आयुर्वेद
3. संस्कृत जैव विविधता एवं पर्यावरण संरक्षण
4. संस्कृत ग्रंथों में मानवाधिकार
5. वैदिक दर्शन एवं विज्ञान
7. भारतीय गणित परंपरा
8. संस्कृत में समग्र स्वास्थ्य की अवधारणा
9. संस्कृत ग्रंथों में राष्ट्रीय चिंतन
10. संस्कृत ग्रंथों में वर्ण उच्चारण एवं ध्वनि विज्ञान
11. वैशेषिक दर्शन में भौतिक विज्ञान
12. भारतीयज्ञानपरंपरा में शिक्षणप्रविधि
13. भारतीयज्ञानपरंपरा में शोधप्रविधि
14. कार्य कारण सिद्धांत की सर्वशास्त्रीय उपयोगिता
15. विश्व शांति के लिए भारतीय दर्शन एवं आध्यात्म की प्रासंगिकता
16. संस्कृत एवं संस्कृति की प्रासंगिकता
17. भारतीय ज्ञान परंपरा में भवन विज्ञान एवं वास्तु शास्त्र

18. संस्कृत ज्योतिर्विज्ञान
19. प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं गुरुकुल परंपरा
17. संस्कृत की आचार्य परंपरा
18. संस्कृत की ग्रंथपरंपरा
19. इतिहास के लिए संस्कृत शास्त्रों का महत्त्व
20. संस्कृत में धर्म एवं आध्यात्मिक तत्वों की प्रासंगिकता
21. संस्कृत वाङ्मय में पांडुलिपि संपादन की कला
22. संस्कृत ग्रंथों में तंत्र युक्तियां एवं उनकी प्रासंगिकता
23. संस्कृत वाङ्मय में राजप्रबंधन व्यवस्था
24. भारतीयज्ञानप्रणाली में प्रबंधन शास्त्र
23. भारतीयज्ञानप्रणाली में खेलकूद (क्रीडा)
24. भारतीय ज्ञान प्रणाली में विधि व्यवस्था
25. भारतीय ज्ञान प्रणाली में नाट्य, संगीत, नृत्य एवं अभिनय परंपरा
26. संस्कृत ग्रंथों के व्याख्यान की प्रविधि
27. संस्कृत शोधप्रविधि
28. दार्शनिक शोधप्रविधि
29. प्राचीनभारतीय दार्शनिक, उनका व्यक्तित्व कृत्तित्व
30. प्राचीन भारत के संस्कृत आचार्य उनका व्यक्तित्व कृतित्व
31. संस्कृत का प्रयोजन या आवश्यकता
32. अखंड भारत के लिए संस्कृत
33. लोक व्यवहार में संस्कृत
34. लोक परंपराओं का स्रोत संस्कृत
35. भारतीय ज्ञान परंपरा में सौंदर्य शास्त्र
36 भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यवहारशास्त्र
37. भारतीय ज्ञान परंपरा में लोक व्यवहार में कुशलता प्राप्त करने के तत्त्व या सिद्धांत
35. भारतीय ज्ञान परंपरा का नैतिकस्वरूप
36. संस्कृत का वैश्विक स्वरूप
37. अष्टादश विद्यास्थान

37. वर्णाश्रम धर्म
38. नीति काव्य की प्रासंगिकता
39. सामाजिक व्यवस्था में संस्कृत ग्रंथों का योगदान
40. संस्कृत में प्रशासनिक व्यवस्था
41. भक्षाली पाण्डुलिपि
42. भारतीय ज्ञान परम्परा की मार्गदर्शिका के अनुरूप अन्य स्वतंत्र विषय

*निष्कर्ष (**Learning outcomes)***

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान प्रणाली इस विषय पर 3 दिवसीय अखिल भारतीय संस्कृत अनुसंधानकर्ताओं के सम्मेलन से निम्नलिखित निष्कर्ष सम्भावित है–

- यह है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के संवाहक के रूप में संस्कृत है। यह सुनिश्चित है। इन विद्याओं का उद्घाटन उचित प्रकार से होना चाहिए। इस सम्मेलन से यह लक्ष्य प्राप्त करने की ओर बढा जा सकेगा।
- उद्घाटित ग्रंथों का तथा अनुद्घाटित ग्रंथों का प्रकाशन होना चाहिए। इस सम्मेलन से यह लक्ष्य प्राप्त किया जा सकेगा।
- शोधकर्ता इन विद्याओं कि प्रत्येक शाखाओं का अनुसंधान कार्य करें तथा उसके अनुरूप सामग्रियों का संकलन प्रस्तुत करें तथा शोध के माध्यम से परस्पर संस्कृत विचारों का आदान प्रदान कर सकेगें।
- सम्मेलन में भारतीय ज्ञान परंपरा का केंद्र संस्कृत इस विषय से संबंधित मौलिक शोध पत्रों के सारांश को सम्मेलन के कार्यवृत्त के रूप में प्रकाशित किया जाएगा।
- संपूर्ण शोध पत्रों में से चयनित शोध पत्रों को ISBN पुस्तक के साथ संपादित करके प्रकाशित करने की भी योजना है।
- इस सम्मेलन के माध्यम से भारत देश में भारतीयज्ञानपरंपरा, संस्कृत एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति से संबंधित हो रहे शोधविषयों की सूची तैयार की जा सकेगी।
- भारतीयज्ञान परम्परा आधारित आधुनिक विषयों सहित अन्तः अनुशासनात्मक शोध द्वारा भारत को विश्वगुरू बनाने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

Registration link- click here	Whatsapp link click here	Payment Qr code For Faculty Rs 200 For Researchers/students Rs= 100 Late fee= 100
	IKS -NEP Conference WhatsApp group	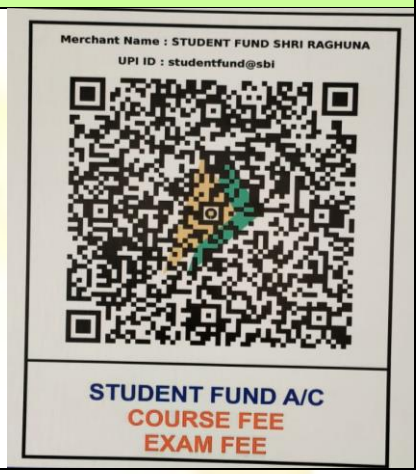

- शिक्षकों के लिए ₹ 200 तथा शोधार्थियों विद्यार्थियों के लिए ₹ 100 पंजीयन शुल्क निर्धारित किया गया है।
- सेमिनार में भाग लेने वालों को प्रमाणपत्र प्रदान किये जायेंगे।
- कृपया अपना विधिवत टाइप किया हुआ संगोष्ठी के विषय से संबंधित शोध पत्र वर्ड और पीडीएफ के साथ पंजीकरण फॉर्म **10-10-2024** से पहले **drsachchidanandsnehi@gmail.com** पर सभी अनुलग्नकों के साथ भेजें।
- सेमिनार के दौरान प्रतिभागियों के लिए आवास और भोजन उपलब्ध कराया जाएगा।
- टी.ए. स्थानीय प्रतिभागियों/दिवसीय विद्वानों को स्वीकार्य नहीं होगा।
- संगोष्ठी का माध्यम प्रतिभागियों की इच्छानुसार संस्कृत/हिन्दी होगा।

कृपया अधिक जानकारी के लिए कैंपस की वेबसाइट **www.csu-devprayag.edu.in** देखें I

शोध पत्र भेजने से पहले कृपया ध्यान दें-

अपने शोध पत्र को निम्नलिखित स्ट्रक्चर में दिनांक 10.10.2024 से पहले भेजें-

- शोध पत्र का सारांश (in 1000 Words) - doc file- Unicode, font size -16
- संपूर्ण शोध पत्र (word) - doc file- Unicode ,font size -16
- शोध पत्र का सारांश (PDF)
- संपूर्ण शोध पत्र (PDF)
- फोटो एवं हस्ताक्षर से युक्त पूरित पंजीकरण पत्र
- अपने शोध पत्र आदि विवरण के साथ जमा की गई फीस की राशि का स्क्रीनशॉट

- एक ही ईमेल में सभी को अटैच करें।
- शोध पत्र एवं शोध सारांश के ऊपर , शोध पत्र का शीर्षक, नाम, विभाग नाम , संस्था नाम, ईमेल आईडी , मोबाइल नंबर जरूर टाइप करें।
- संदर्भ ग्रंथ सूची को व्यवस्थित करें।
- संदर्भ ग्रंथ सूची में लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशक , प्रकाशन वर्ष, संस्करण एवं पेज नंबर जहां से आप कोट कर रहे हैं का संदर्भ लिखें।
- शोध पत्र के ऊपर रिवाइज्ड as on 10.10.2024 लिखे।
- **शोध पत्र केवल निम्नलिखित ईमेल पर भेजें drsachchidanandsnehi@gmail.com**

Dr. Sachchidanand Snehi
Associate Professor & Convener
Department of Philosophy
7979882977

(Prof.P.V.B. Subrahmanyam)
Director

CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY
Shri Raghunath Kirti Campus
Devprayag-249301

CSU Sponsored Three day's National conference

on

Indian Knowledge System in the light of New Education Policy- 2020

(November, 15 – 17, 2024)

Registration Form

Kindly Paste Photo

1. **Name (In English) :**
2. **(In Hindi Devnagari Script)**
3. **Fathers Name :**
4. **Date of Birth :**
5. **GEN/ST/SC/OBC/PH :**
6. **Whatsapp No. :**
7. **Email ID :**
8. **Gender (Male/female/Others) :**
9. **Present Occupation/Designation :**
10. **Name of the Department :**
11. **Institutional Address :**
12. **Home Address :**
13. **Class (if Student) :**
14. **Qualification :**
15. **Area of Specialization :**
16. **Teaching/Research experience :**
17. **Add ID Proof (Institutional I card) :**
18. **Topic of Research Paper :**
19. **Add N.O.C. and**

Signature of the Applicant

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE